# प्र क र ण - ३

## डा. वर्मा के ऐतिहासिक नाटक व एकांकी

" यदि आप मेरे नाटकों पर दृष्टि डालें तो आपको ज्ञात होगा कि मैंने सामाजिक नाटकों की अपेक्षा ऐतिहासिक नाटक अधिक लिखे हैं। इसका एक कारण राष्ट्र की संस्कृति में मेरा विश्वास है, जिसका विकास करने में हमारे ऐतिहासिक महा-पुरुषों का विशेष हाथ रहा है, दूसरे ऐतिहासिक तथ्य के निरूपण में हमारे जीवन को एक नैतिक धरातल मिलता है। "

दीपदान -- डा. रामकुमार वर्मा ।

डा. वर्मा के ऐतिहासिक नाटक व एकांकी :--

नाटक साहित्य का साकार रूप है, वह साहित्य के अन्य अंगों की अपेक्षा जन साधारण से सबसे अधिक निकट है । नाटक में जीवन की वास्तविकता, सौन्दर्य-विधायिनी कल्पना के रंगों से पूर्ण होकर, रंगमंच पर अवतरित होती है । जिसमें जीवन की एक झलक मिलती है । साहित्य के अन्य अंगों - कविता, उपन्यास, कहानी आदि को रंगमंच का यह वरदान प्राप्त नहीं है । इसी कारण साहित्य के अन्य रूप अपना प्रभाव जन-साधारण पर डालने में नाटक की भांति सफल नहीं हो पाते । प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से नाटक साहित्य का सब से अधिक सबल माध्यम है ।

प्राय: देखा जाता है कि युग के वातावरण से नाट्य साहित्य सब से अधिक प्रभावित होता है । एलिजाबेथ-युगीन शान्ति और वैभव, शेक्सपियर, मार्लो आदि नाटककारों की कृतियों में रोमांस की प्रमुखता का कारण बना । इंग्लैण्ड में ही "रेस्टोरेशन" युग की विलासिता की छाप ड्राइडन आदि नाटकों पर है । इसी प्रकार भारतेन्दु युगीन नव जागरण का सन्देश नाटक के माध्यम से ही व्यक्त हुआ है ।

वर्मा जी की रुचि सम्पूर्ण नाटकों की अपेक्षा छोटे-छोटे एकांकी नाटकों की रचना की ओर अधिक रही है । इसका कारण यह है कि वे समाज व जीवन के मौलिक सत्यों को क्षण भर की अनुभूति में कसकर पाठक या दर्शक के सम्मुख इस भांति रख देना चाहते हैं कि दर्शक की समस्यागत जिज्ञासा शान्त हो जाये और तर्क निखर । एकांकी की सामयिक उपयोगिता है । समाज की रूढ़ि बद्ध विचारधाराओं, परम्पराओं तथा कुंठाओं की असारता सिद्ध कर उनको सामाजिक के लिए कम समय में अरुचिकर बना देना एकांकी की अपनी विशिष्टता है ।

" बादल की मृत्यु " नामक एकांकी द्वारा आपने हिन्दी साहित्य में एकांकी नाटकों की परम्परा का सूत्रपात किया । यद्यपि यह वर्मा जी का प्रारम्भिक प्रयास था पर इसमें कथानक का अभाव होते हुए भी वर्मा जी की प्रखर प्रतिभा के उज्ज्वल बीज विद्यमान थे । उसके पश्चात की उनकी रचनाएं श्रेष्ठ व कलात्मक आवरण में सुसज्जित हो कर सामने आईं । विषय की दृष्टि से उनके अधिकांश नाटकों के कथानक ऐतिहासिक व सामाजिक होते हैं । उन्होंने पौराणिक व सांस्कृतिक अन्तराल पर भी अपने कुछ एकांकियों की रचना की है । पर इस तरह के एकांकी नाटकों की संख्या कम ही है । इन नाटकों में वह " कुरूप के भीतर से पवित्रता, दैन्य के भीतर शालीनता, वासना के भीतर आत्म-संयम, एवं क्षुद्रता के भीतर महानता का अन्वेषण करने में समर्थ हुए हैं और यह सब उन्होंने पात्रों की परिस्थितियों के संदर्भ से स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है । इस प्रकार अपने आदर्शवाद में वह अपने देश और संस्कृति के प्रतिनिधि ज्ञात होते हैं । उनमें उच्च कोटि की राष्ट्रीय भावना है ।

डा. शिवदानसिंह चौहान के अनुसार " उनकी प्रवृत्ति मनोवैज्ञानिक संघर्षों का सूक्ष्म चित्रण करने की ओर है । इसमें सन्देह नहीं कि वर्मा जी एक श्रेष्ठ एकांकीकार हैं और हिन्दी के एकांकी नाटक को श्रेष्ठ कलात्मक रूप देने में उनका योगदान है ।उनके अधिकांश नाटक दुखान्त होते हैं और इसी कारण सामाजिकों पर गहरा प्रभाव डालते हैं । १

डा. वर्मा जितने कवि रूप में प्रसिद्ध हैं, एकांकीकार के रूप में उससे भी अधिक । उनके एकांकी न केवल भारत में ही अभिनीत होते रहे हैं अपितु समय समय पर रूस, पोलैंड

---

१. हिन्दी गद्य साहित्य -- डा. शिवदानसिंह चौहान
और
---- पृ सं. ५७
विजय चौहान

हंगरी आदि में भी अभिनीत हुए हैं। उनके कतिपय एकांकी नाटकों का भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। परन्तु हमारे अध्ययन का विषय उनके ऐतिहासिक नाटक एवं एकांकी हैं। अत: इतिहास के कालक्रम के अनुसार उनके एकांकी व नाट्य साहित्य को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है :-

**जैन व बौद्ध काल :-**

नाटक --

(१) कला और कृपाण

एकांकी --

(१) सम्राट उदयन पर अभियोग

(२) रात का रहस्य

**मौर्य-काल :-**

नाटक --

(१) अशोक का शोक

(२) विजय पर्व

एकांकी --

(१) मर्यादा की वेदी पर

(२) सौन का वरदान

(३) बालमित्रा

(४) वासवदत्ता

(५) स्वर्ण श्री

(६) श्री विक्रमादित्य

**गुप्त-काल :--**

एकांकी --

(१) समुद्रगुप्त का पराक्रमांक

(२) कृपाण की धार

(३) कादम्ब या विष

**हर्ष-काल :--**

एकांकी --

(१) राज्य श्री

**राजपूत-काल :--**

नाटक --

(१) महाराणा प्रताप

(२) जौहर की ज्योति

(३) सारंग स्वर

एकांकी --

(१) भाग्य नक्षत्र

(२) दीपदान

(३) भुवनाटिका

(४) कलंक रेखा

मराठा-काल :--

नाटक --

(१) नाना फडनवीस

एकांकी --

(१) शिवाजी

(२) पानीपत की हार

मुगल-काल :--

एकांकी --

(१) औरंगजेब की आखिरी रात

(२) दीने इलाही

(३) दुर्गावती

(४) तैमूर की हार

डा. वर्मा ने पूर्ण नाटकों की रचना कम ही है । उनके केवल सात पूर्ण नाटक है जिनमें से तीन राजपूत इतिहास से संबंधित हैं । अतएव हम सर्व प्रथम राजपूत इतिहास संबंधी नाटक एवं एकांकियों की चर्चा करेंगे ।

भारतीय इतिहास में राष्ट्रीयता व मातृ-भूमि के प्रति ममत्व भाव की प्रेरणा राजस्थान में सब से अधिक रही है । स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अनुपम त्याग, आत्म-विश्वास व संघर्ष जो राजस्थानवासियों ने किया वह मानवता के लिए अनुकरणीय है । राजस्थान की गौरवमयी गाथाएं इतिहास की ऐसी विभूति है जो शताब्दियों तक जन-मानस के लिए प्रेरणादायक रहेगी । राजस्थान को इस का गर्व है कि उसकी माटी

है ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने पौरुष से युगान्तर उपस्थित कर इतिहास के पृष्ठों में अपना नाम अमर कर दिया है। कर्नल टाड ने राजस्थान के इतिहास के सम्बन्ध में लिखा था " राजस्थान का एक छोटा राज भी ऐसा नहीं है जहां " थर्मोपोली " न हों, और कठिनाई से ही कोई ऐसा नगर मिलेगा , जहां लियोनिडस " पैदा न हुए हों।" १

जहां स्थान-स्थान पर रण क्षेत्र की रक्त रंजित भूमि हो और वंश-वंश में साहसी वीर पुत्र हों। उस देश की गौरवगाथा स्वर्णाक्षरों में लिखी जानी चाहिए। परन्तु स्वयं राजस्थान के इतिहास की रचना भली भांति नहीं हो पाई है। राजदरबारी कवियों एवं भाटों द्वारा तत्कालीन राजाओं की वंशावलियां तथा जीवनवृत्त अवश्य प्रस्तुत किए किन्तु वीर पूजा की भावना एवं अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा ने उन कृतियों को अतिरंजित कर दिया है। राजस्थान के इतिहास को क्रमबद्ध तथा अन्वेषणात्मक रूप से लिखने में कर्नलटाड तथा डाक्टर टैसीटरी का प्रयत्न सराहनीय है।

ऐसे महत्वपूर्ण राजस्थान के इतिहास को अपने कथानक का विषय बनाकर डा. वर्मा ने " महाराणा प्रताप " की रचना की। यद्यपि महाराणा प्रताप को विषय बना कर प्रचुर साहित्य की रचना हुई है , परन्तु प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य महाराणा प्रताप के गौरवशाली व्यक्तित्व व चरित्र को प्रभावशाली रूप में उपस्थित करना है। यद्यपि महाराणा के चरित्र में विरुद गायकों ने सत्य में कल्पना का इतना अंश जोड़ दिया है कि उनकी ऐतिहासिकता समाप्त सी हो गई है। परन्तु इसके विपरीत प्रस्तुत नाटक इतिहास की परिप्रेक्ष्यता लिए हुए मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत नाटक तीन अंकों में लिखा गया है। प्रथम अंक अभिषेक पर्व है, जिनमें

---

१. देखिए -- टाड का राजस्थान -- प्रथम भाग -- परिचय ।

उन सभी परिस्थितियों का आकलन किया गया है, जो राजस्थान में गृह-विद्रोह के समय उपस्थित हुआ करती थीं । द्वितीय अंक में मेवाड़ को व्यवस्थित करने में उनकी जो प्रेरणा व निष्ठा है उसकी अपेक्षा विविध प्रसंगों में उपस्थित की गई है । तृतीय अंक में दो भावनाओं का चित्रण है । पूर्वार्द्ध में हल्दीघाटी के युद्ध का परिणाम अवसाद लिए स्पष्ट होता है और उत्तरार्द्ध में मेवाड़ की मुक्ति के लिए पुन: अभियान आरम्भ होता है । तीनों अंकों में कथावस्तु के अन्तर्गत ऐसे प्रसंग चुने गये हैं जो महाराणा प्रताप को महापुरूष की परिभाषा में बांध सकें ।

" जौहर की ज्योति " राजस्थान के इतिहास व वातावरण से परिप्लावित नाटक है । यद्यपि अग्नि में समर्पित हो जाने के गौरवपूर्ण से राजस्थान का इतिहास अनंत काल तक देदीप्यमान रहेगा । परन्तु प्रस्तुत नाटक में हृदय रक्त का जौहर सफी-उन्नीसा बानू द्वारा किया गया है । प्रस्तुत नाटक सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से आरम्भ होता है । जब औरंगजेब आलमगीर ने मारवाड़ की शक्ति को अपनी तुला पर तौलना चाहा था । मेवाड़ केसरी दुर्गादास ने जिस प्रकार मारवाड़ वंश की रक्षा के लिए प्रयत्न किया तथा अपनी बुद्धि व शक्ति का परिचय दिया वह इस नाटक का मुख्य विषय है । प्रस्तुत नाटक भी तीन अंकीय है । तृतीय अंक ध्रुवतारिका " नामक एकांकी रूप में अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ ।

" सारंग स्वर " डा वर्मा की नवीनतम कृति है । सारंग स्वर का संगीतमय आरोह-अवरोह माण्डवगढ़ के पतन का करूण संगीत है । माण्डवगढ़ के सुल्तान बाज-बहादुर तथा उसकी अप्रतिम सुन्दरी रानी रूपमती की प्रणय कथा का पर्यवसान इस नाटक का कथानक है । प्रस्तुत नाटक रानी रूपमती के उदात्त चरित्र व उसके पातिव्रत्य के अद्भुत उदाहरण को लक्ष्य कर लिखा गया है । नाटक का आरम्भ युद्ध की विभीषिका से होता है तथा अन्त रानी रूपमती की मृत्यु से । इससे नाटककार को पात्रों के

चरित्र का सौन्दर्य निखारने के अनेक अवसर प्राप्त हो गये हैं । यद्यपि बाजबहादुर व रानी रूपमती की प्रणयगाथा इतिहास में ही नहीं लोक कथाओं व साहित्य में भी प्रसिद्ध है तथापि लोक मर्यादा के मानसिक स्तर को उद्घाटित करने के लिए प्रस्तुत नाटक की रचना हुई है । प्रस्तुत नाटक में अंकों के अन्तर्गत दृश्यों का विभाजन नहीं वरन् अंक ही इस नाटक की इकाइयां हैं ।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में मौर्य युग का अत्यन्त महत्व है । इस काल में प्राय: सम्पूर्ण भारत एक शासन के आधीन था । देश की राजनीतिक एकता भली भांति स्थापित थी, और भारत के धार्मिक नेता सुदूर तक धर्म विजय स्थापित करने में तत्पर थे । केवल राजनीतिक व धर्म के क्षेत्र में ही नहीं अपितु कला, शासन, शिक्षा समाज आदि सभी क्षेत्रों में इस काल में भारतीयों ने उन्नति के चरम शिखर को छू लिया था । मौर्य काल को अपने कथानक का आधार बना कर डा. वर्मा ने दो नाटकों की रचना की है " विजय पर्व " तथा " अशोक का शोक " ।

" अशोक का शोक " तथा " विजय पर्व " दोनों नाटक इतिहास प्रसिद्ध प्रियदर्शी अशोक से संबंधित हैं । अशोक की गणना केवल भारतीय इतिहास के सर्वोत्तम शासकों में ही नहीं होती वरन् विश्व इतिहास में भी वे अनुपमेय हैं । जैसा कि डाक्टर एच.जी वैल्स का कथन है " उन हजारों राजाओं के नामों में जिन्हों ने इतिहास के पृष्ठों को अलंकृत किया है। " अशोक का नाम एक अकेले सितारे की तरह चमकता है और चमकता रहेगा ।"

सम्राट अशोक का ऐतिहासिक व्यक्तित्व प्राचीनता की गहराइयों में अस्पष्ट सा हो गया है तथा अब तक जो नाटक उन पर लिखे गये हैं उनके व्यक्तित्व को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं । प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य अशोक संबंधी भ्रांतियों का निवारण कर उसका इतिहास सम्मत रूप प्रस्तुत करना है ।

" विजय पर्व " तीन अंकीय नाटक है । तीनों अंकों में एक एक प्रमुख बिन्दु है, जिसे केन्द्र बनाकर ही वस्तु परिधि के चारों ओर घूमती है । प्रस्तुत नाटक में अशोक के सिंहसनारोहण से लेकर कलिंग विजय तक की कथा है । कलिंग विजय से ही उनकी धर्म विजय आरम्भ-प्रारम्भ होती है । युद्ध का अन्तिम दिन उनका विजय पर्व है, यह विजय कलिंग पर अशोक की विजय ही नहीं, हिंसा पर अहिंसा की विजय है, क्रूरता पर दया की विजय है । इसी कारण इस नाटक का नाम विजय पर्व है ।

" अशोक का शोक " अशोक के मनोवैज्ञानिक चारित्रिक विश्लेषण को प्रस्तुत करता है । वैदिक और बौद्ध धर्म ने हिंसा और अहिंसा को लेकर जीवन को लोकोत्तर और लौकिक पक्ष दिशा में ले जाने में संघर्ष किया जिससे मानवता के दोनों पक्षों के सापेक्ष महत्व को समझने का अवसर मिला । हिंसा और अहिंसा के चरम बिन्दुओं पर आन्दोलित होने वाला एक ही महान व्यक्ति इतिहास ने हमें प्रदान किया है और वह है अशोक । प्रस्तुत नाटक में सम्राट अशोक के ऐतिहासिक व्यक्तित्व पर डा. वर्मा ने सीधी प्रकाश रेखा न डालने का साहस करते हुए एक काल्पनिक स्त्री-पात्र चारुमित्रा के माध्यम से अशोक की मनोवैज्ञानिक सिहरती हुई जिज्ञासा को संकल्प के रूप में परिवर्तित होते हुए देखा है ।

" कला और कृपाण " बौद्ध-काल का नाटक है, जिसके नायक ऐतिहासिक प्रसिद्ध महाराज उदयन है । बौद्ध धर्म का विकास ब्राह्मण कर्मकाण्ड, बाह्य आडंबर, तथा रूढ़ि-वादिता के विरुद्ध हुआ था । वह युग संक्रांति युग है जहां जनता नवीन धर्म को अपनाने के लिए आतुर थी वहां प्राचीन के प्रति मोह त्याग भी कठिन था ।

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु का निर्माण करते समय नाटककार के मस्तिष्क में भास के दो अन्य नाटकों की भी स्मृति थी प्रतिज्ञा यौगन्धरायण एवं स्वप्नवासवदत्तम प्रस्तुत नाटक भी तीन अंकीय है । प्रथम अंक में मंजूघोषा उदयन को वशियोगी सिद्ध कर परिणाम जानने को उत्सुक रहती है । द्वितीय अंक में उदयन वीणा वादन को प्रस्तुत

होते हैं । परन्तु कृपाण को स्वीकार करना पड़ता है । तृतीय अंक की समाप्ति उनके बौद्ध धर्म में दीक्षित हो जाने से होती है । नाटक का नाम कला और कृपाण अत्यन्त सार्थक है क्योंकि नाटक के नायक वीणा वादन तथा कृपाण प्रयोग में समान रूप से सिद्धहस्त है । प्रस्तुत नाटक में हिंसा पर अहिंसा की विजय चित्रित की गई है, यह आधुनिकतम गांधीवाद का प्रभाव है । इस प्रकार यह ऐतिहासिक नाटक होते हुए भी वर्तमान का संदेशवाहक है ।

मराठों का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने दो शताब्दी से अधिक भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण भाग लिया तथा मुगल साम्राज्य के पतन में ~~उस देश की प्राकृतिक दशा के~~ विशेष रूप से योग दिया । मराठों के उत्थान में उस देश की प्राकृतिक दशा ने अत्यन्त सहयोग दिया । विशिष्ट अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि यह समय की मांग थी जिससे मराठों ने राजनैतिक उथल पुथल में भाग लेना प्रारंभ कर दिया ।

मराठा इतिहास पर डा. वर्मा का एक ही नाटक है, " नाना फडनवीस " प्रस्तुत नाटक में तीन अंक हैं । तीनों अंकों का पृथक पृथक नामकरण नाट्य शैली की दिशा में नवीन प्रयोग है । प्रथम अंक का शीर्षक " पानीपत की हार " द्वितीय अंक का शीर्षक " विदीर्ण को शान्ति " तथा तृतीय अंक का " नाना फडनवीस " है । नाटक में आद्यो-पान्त इतिहास का स्पन्दन है । वस्तु प्रसार को संस्कृत नाट्य शास्त्र की कार्यावस्थाओं में विश्लेषित किया जा सकता है ।

एकांकी :--

भारतीय इतिहास के विवादास्पद युग जैन व बौद्ध काल को अपने कथानक का आधार पर डा वर्मा ने " अभियोग व रात का रहस्य " नाम एकांकियों की रचना की है । जिनका कथानक क्रमशः मगध सम्राट अजातशत्रु व वत्सराज उदयन से संबंधित है ।

भारतीय इतिहास, भारतीय साहित्य, जैन व बौद्ध ग्रन्थ में इनके विषय में प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है । " रात का रहस्य " बौद्ध कालीन भारत, कुणिक के अत्याचारों, देवदत्त व लिच्छवी रानी कल्पना के षड्यन्त्रों को उद्घाटित करता है ।" अभियोग " भारतीय सम्राटों की आदर्श प्रियता तथा साधारण किरात कन्या के सम्मुख अपने अपराध को स्वीकार न्याय प्रियता की आदर्श झांकी प्रस्तुत करता है ।

मौर्य-काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है । इस काल से संबंधित डा - वर्मा के छ: एकांकी हैं । मर्यादा की वेदी पर इतिहास प्रसिद्ध सिकन्दर व पुरु के युद्ध से सम्बन्धित एकांकी है । भारतीय मर्यादा पर अपना बलिदान देने वाली भैरवी " डा. वर्मा की कल्पना का परिणाम है ।" कौमुदी महोत्सव " मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के जीवन-काल पर आधारित एकांकी है । इस एकांकी की घटनायें विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस के समान विकसित होती हैं । परन्तु चाणक्य की नीतिकुशलता से चन्द्रगुप्त की जीवन रक्षा होती है ।

" शील का वरदान " एवं चारुमित्रा " प्रियदर्शी अशोक के जीवनवृत्त संबंधी घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं । ये एकांकी क्रमश: उसके राज्याभिषेक तथा कलिंग युद्ध से सम्बन्धित हैं । चारुमित्रा डा वर्मा का सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक एकांकी है, जिसे विश्व साहित्य में भी स्थान मिला है । चारुमित्रा " डा वर्मा की कल्पना का चन्द्रगुणी चरित्र है, जो ऐतिहासिक न होते हुए भी इतिहास सम्मत जान पड़ता है ।

" वासवदत्ता " तथा " स्वर्ण श्री " अंतिम मौर्यकालीन वातावरण को प्रस्तुत करते हैं । वासवदत्ता बौद्ध जातक कथाओं की प्रसिद्ध गणिका है । लोक-साहित्य तथा किंवदंतियों में उसके विषयक अनेक कथायें उपलब्ध होती हैं । यहां प्राप्त सामग्री तथा कल्पना का सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत किया गया है । " स्वर्ण श्री " अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ तथा शुंगवंशीय पुष्यमित्र जो कालान्तर में शुंग वंश का संस्थापक बना ।प्रस्तुत एकांकी राजनैतिक घटनाओं पर आधारित है ।

गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का " स्वर्णयुग कहा जाता है सम्भवत: इसी तथ्य को लक्ष्य को डा. वर्मा ने गुप्तकालीन अनेक एकांकियों की रचना की है । " श्री - विक्रमादित्य " शकों एवं गुप्तों के काल की ऐक मनोरम झांकी प्रस्तुत करता है जो ऐतिहासिक होने के साथ साथ मनोरंजक भी है ।" समुद्रगुप्त का पराक्रमांक " इतिहास व विदेशों में प्रसिद्ध समुद्र गुप्त की संगीत प्रियता व न्याय प्रियता पर आधारित एकांकी है ।

" कृपाण की धार " परम भट्टारक रामगुप्त की कायरता तथा चन्द्रगुप्त की राजनीति से संगठित एकांकी है । इतिहास प्रसिद्ध घटना जैसे शकराज द्वारा ध्रुवस्वामिनी की मांग पर इस एकांकी की रचना की गई है । " आदम्य या विष " परम भट्टारक कुमारादित्य की हत्या से संबंधित एकांकी है । ध्रुवगुप्त की माता जो स्कन्धगुप्त से ईर्ष्या करती है तथा अपने पुत्र को राज्याधिकारी देखना चाहती है अपनी नीति कुशलता से सम्राट को हत्या कर देती है । यही इस एकांकी की कथावस्तु का आधार है ।

" राज्यश्री " हर्षवर्धन कालीन घटनाओं पर आधारित एकांकी है । राज्यश्री के पति की हत्या शशांक द्वारा की जाती है । जिसके वियोग में वह अग्नि में प्रवेश करना चाहती है, परन्तु दिवाकर मित्र तथा अपने ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञा से जीवित रहना स्वीकार करती है । राज्यश्री की सभी घटनाएं ऐतिहासिक हैं तथा बाणकृत कादंबरी से समानता रखती हैं ।

" भाग्य नक्षत्र " अन्तिम हिन्दू सम्राट महाराज पृथ्वीराज के जीवन पर आधारित एकांकी है । इस एकांकी की घटनाएं चन्दबरदायी कृत पृथ्वीराज रासो की घटनाओं से समानता रखती है । इस एकांकी की घटनाओं से समानता रखती है । इस एकांकी की घटनाएं ऐतिहासिकता से परिप्लावित हैं साथ ही भारतीय संस्कारों तथा मान्यताओं पर विकसित हैं । संयोगिता के साथ ऐश्वर्य व विलासिता का त्याग करना

भारतीयों को घुट्टी में पिलाया जाता है, जिसका परिचय पृथ्वीराज ने इस एकांकी में दिया है ।

यद्यपि इतिहास में तैमूर को एक क्रूर तथा हृदय हीन व्यक्ति सिद्ध किया गया है तथापि तैमूर की हार एकांकी में तैमूर जैसे विजेता की एक भारतीय अबोध बालक बलकरण द्वारा पराजित होने की आधारशिला मानवोचित भावना है । इस एकांकी के पात्रोंमें तैमूर को छोड़कर सभी काल्पनिक पात्र हैं । वर्मा जी ने इस एकांकी में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि जो शक्तिशाली होता है उसमें शक्ति परखने की भी क्षमता होती है ।

" दीपदान " इतिहास प्रसिद्ध पन्नाधाई के बलिदान व त्याग पर आधारित मर्मस्पर्शी एकांकी है । राजस्थान तो वैसे भी इतिहास में अपने त्याग, शौर्य, बलिदान, व जौहर के लिए विख्यात है उसी त्याग का एक अनुपम उदाहरण दीपदान है । पन्ना मेवाड के उत्तराधिकारी उदयनसिंह के जीवन की रक्षा अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर करती है । उसने अपने हृदय का दीपक बुझाकर मेवाड़ का दीपक प्रज्ज्वलित रखा यही उसका दीपदान है ।

" कलंक रेखा " मत्स्योन्मुख राजस्थान की चित्ररेखा प्रस्तुत करता है ।कृष्णा-कुमारी का अपूर्व बलिदान, साहस व दृढता राजपूतनियों के अनुकूल है । कृष्णा कुमारी का जौहर विष की ज्वाला में हुआ तथा राजस्थान कायरोंकी भांति देखता रहा।विधुत की चमकती हुई उज्जवल रेखा राजस्थान के लिए कलंक रेखा बन गई ।

" दुर्गावती" भारतीय वीरांगना गढमण्डला की रानी दुर्गावती का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है । दुर्गावती शील, शक्ति, सौन्दर्य व पातिव्रत के प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत किया गया है । वह एक कुशल शासिका ही नहीं वरन्, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी है । इसांकी में प्रस्तुत दुर्गावती के मनोविज्ञान में भारतीय नारी की तेजस्विता प्रस्तुत की गई है ।

मराठा कालीन इतिहास से संबंधित " पानीपत की हार " नाना फड़नवीस " तथा " शिवाजी " डा. वर्मा के एकांकी हैं । " शिवाजी " नामक एकांकी में छत्रपति शिवाजी की नैतिक दृढ़ता, शौर्य चरित्र की निर्मलता, भारतीय संस्कृति का गौरव तथा उनकी मातृ भक्ति प्रदर्शित की गई है । " पानीपत की हार " इतिहास प्रसिद्ध तृतीय पानीपत के युद्ध पर आधारित एकांकी है जिसमें सामन्तों के विश्वासघात के कारण मराठों की पराजय हुई । " नाना फड़नवीस " महाराष्ट्र के कूटनीतिज्ञ नाना फड़नवीस की स्वामी-भक्ति की आधार शिला पर आधारित एकांकी है । वे वे अपने नमक का हक़ अपने स्वामी की विधवा पत्नी गंगा की रक्षा, काका राघोबा तथा काकी आनंदीबाई के कुचक्रों से अदा करते हैं ।

मुगलकालीन इतिहास को अपने एकांकी का विषय का बनाकर डा. वर्मा ने " दीने इलाही " ध्रुवतारिका " तथा " औरंगज़ेब की आखिरी रात की रचना की । दीने इलाही में अकबर धर्म विषयक अपने उद्गार प्रकट करता है जो मूल रूप से गीता का ही भावानुवाद है । ध्रुवतारिका मारवाड़ के राजकुमार अजीतसिंह तथा औरंगजेब की पोती सफीयत की प्रेम कहानी है, इसमें नाटककार का मूल उद्देश्य चरित्रगत सौन्दर्य प्रकट करना है । औरंगज़ेब की आखिरी रात में मृत्यु शैय्या पर पड़े औरंगजेब के पश्चाताप व आत्म-ग्लानि के चित्र को प्रस्तुत किया गया है । संवादों की व्यंजना मनोविज्ञान द्वारा खींची गई है ।